शरीर को प्रभावित करती है। जिस गुण की ऊर्जा होती है उसका प्रभाव पूरे शरीर पर होता है। शरीर के अंदर से निकलने वाली ऊर्जा इसको घुमावदार बना रखती है, ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार गुब्बारे में हवा भर दी जाती है तो गुब्बारा फूला रहता है। जब हवा निकलने लगती है तो गुब्बारा पिचक जाता है। गुब्बारा हवा नहीं बनाता है इसलिए पिचक जाता है पर शरीर के अंदर हमेशा हवा बनती रहती है इसलिए लाइन घुमावदार बनी रहती है। शरीर जब एक निर्धारित जीवन जी लेता है तब उसके सेल्स(**कोशिका**) कमजोर पड़ने लगते है और हवा का बनना कम हो जाता है। अथवा इन पांच बिंदुओं के अंग असमय खराब हो जाने के कारण हवा का बनना कम हो जाता है और बाह्य ऊर्जा नहीं खींच पाते हैं तो पांचों लाइनें एक सीध में हो जाती हैं। जिससे मानव की मृत्यु हो जाती है। जब श्वसन क्रिया से ऑक्सीजन आता है तो पूरे शरीर को ऊर्जा देता है। जब व्यक्ति सकारात्मक सोच रखता है तो ऊर्जावान ऊर्जा शरीर में आती है जो रोग प्रतिरोधी क्षमता बढ़ा देती है। व्यक्ति जब किसी बीमारी से प्रभावित होता है तो उस समय बीमारी को खत्म करने जैसे भाव बनाकर सांस लेता रहे तो उसी गुण की ऊर्जा बाहर से आती है और उसी गुण की ऊर्जा शरीर में बनाती है और वैसा जीवाणु शरीर में बनने लगता है जो रोग को खत्म कर देता है। शुभ चिंतकों द्वारा भी ऐसा भाव बनाकर ऊर्जा छोड़ी जा सकती है जो दवा बनकर बीमार व्यक्ति के अंदर जाकर सहयोगी जीवाणु बनाने लगती है। जिससे बीमार व्यक्ति की बीमारी खत्म होने में सहायता मिलती है।

बीमार व्यक्ति जो दवा खाता है उससे भी ऊर्जा बनती है जो हानिकारक जीवाणु खत्म करके सहयोगी जीवाणु बढ़ाने लगती है। डॉक्टर भी यह कहते हैं कि हमने अपनी कोशिश कर ली, अब ऊपर वाले की कृपा और लोगों की दुआएं इन्हें जल्द ठीक कर सकती है। **ऊपर वाले की कृपा और लोगों की दुआएं सही काम करें उसके लिए मरीज की सकारात्मक सोच का होना आवश्यक होता है।** जब व्यक्ति अपने ईष्ट को याद करता है अथवा ध्यान करता है तो उसका मानसिक संबंध उससे जुड़ जाता है। जिस तरह का उसका भाव होता है उस तरह की ऊर्जा वहां से आने लगती है जो अपने गुणों का फैलाव उसके शरीर में करने लगता है। जैसा गुण होता है वैसे जीवाणु शरीर में बनने लगते हैं। परिणामस्वरूप व्यक्ति बीमारी से निजात पाने लगता है। दवा के साथ–साथ यदि व्यक्ति इसका इस्तेमताल करे तो जल्दी अवश्य ठीक हो सकता है। मरीज के पास आने वालों को उत्साहित विचार ही व्यक्त करना चाहिए और मरीज के उत्साह को बढ़ाना चाहिए।❐

शरीर में पांच बिंदु(तीन ऊपर और दो नीचे) आंख, कान, मुंह, मल, मूत्र की लाइन एक दूसरे से जुड़ी होती है। शरीर के अंदर बनने वाली ऊर्जा (हवा) इन लाइनो को घुमावदार बनाए रखती है। इन पांच लाइनों का केंद्र बिंदु मस्तिष्क होता है।

इस प्रकार सकारात्मक सोच ही हर मर्ज की दवा है।

www.suryaashram.com